IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–7388, p- ISSN: 2320-737x Volume 15, Issue 5 Ser. 2 (Sept. – Oct. 2025) 27-32
www.iosrjournals.org

भारतीय ज्ञान प्रणाली में शैक्षिक नवाचार एवं विकसित भारत 2047

डॉ०बिमलेश कुमार सिंह
वरिष्ट प्राध्यापक मधेपुर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय मधेपुर ,मधुबनी

Abstract
भारतीय ज्ञान प्रणाली में शैक्षिक नवाचार के प्रयास द्वारा 2047 ईस्वी तक भारत सरकार का विज़न है ,भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है, जो कि इसकी स्वतंत्रता का 100 वाँ वर्ष होगा । इस विज़न में विकास के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जिसमें नवाचारी शिक्षा, आर्थिक वृद्धि, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन शामिल हैं। शिक्षा नीति नई सोच, नया भारत, शिक्षा से शक्ति, की ओर मूल मंत्र के साथ यह आगे कार्य करेगी

| भारत विश्व गुरु, विश्व जगत, विश्व पोशक, विश्व मार्गदर्शक, विश्व हितैषी, विश्व ज्योति, विश्व प्रेरक, बनाने के लिए NEP 2020 कारगर साबित होगा| जैसा कि हम सब जानते हैं सिलेबस पढ़कर के हम विश्व गुरु नहीं बना सकते हैं | इस विज़न में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू शामिल हैं। चूँकि भारत इस महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है, जो अपने विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है, इसलिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि भारत के भाग्य में जबरदस्त समर्पण और विश्वास, भारतीयों, विशेषकर युवाओं की अपार इच्छा, क्षमता, प्रतिभा और क्षमताओं के साथ-साथ दृढ़ नेतृत्व इस क्षमता को साकार करने के लिए आवश्यक है। 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने के लिए मिशन मोड में बहुत काम करने की आवश्यकता है। ऐसा होने के लिए, एक साहसिक, महत्वाकांक्षी और परिवर्तनकारी एजेंडा तैयार करने और सभी हितधारकों तक इसके संचार की आवश्यकता है। हमारे सबसे बड़े जनसंख्या समूह का गठन करने वाले युवाओं की भूमिका यहाँ बहुत बड़ी है क्योंकि वे 2047 तक भारत को विकसित भारत की ओर ले जाएँगे।जिसमे शिक्षा में नवाचार कोई निश्चित परिभाषा वाला विशिष्ट शब्द नहीं है। नवाचार शिक्षा की भावना समस्याओं को नए नज़रिए से देखने और उन्हें अलग, नए तरीकों से हल करने का खुलापन है। यह इस बात की पहचान है कि हमारे पास सभी उत्तर नहीं हैं और हम सुधार के नए तरीकों के लिए खुले हैं, जैसे कि नवीन शिक्षण रणनीतियों के साथ ज्ञान हस्तांतरण के तरीके।

भारत अपने इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। 21वीं सदी भारत की सदी होगी, क्योंकि देश अपनी क्षमताओं के प्रति आश्वस्त होकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है।

Key Points: *नवाचार, शिक्षा, विकसित, सुशासन, आत्मविश्वास, कर्तव्य, आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण, नैतिक अखंडता, आध्यात्मिक ज्ञान, उत्साह, रचनात्मकता, मातृभूमि, निडर, निस्वार्थ, मानवता, गर्मजोशी, सौहार्दपूर्ण, स्वास्थ्य, शभक्ति, विविधता में एकता, समावेशिता, पवित्रता, जवाबदेही, पारदर्शिता, भागीदारी आदि|*

Date of Submission: 05-09-2025 Date of Acceptance: 15-09-2025

I. प्रस्तावना (Introduction)

आज की भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है जो भारत के भविष्य के भारत की चुनौतियों और भारत को ऐतिहासिक उत्तरदायित्व है विश्व गुरु बनने का यह भारत कैसा होना चाहिए? राष्ट्र कैसा होना चाहिए? शिक्षा और राष्ट्र के बीच का संबंध कैसा होना चाहिए?

शिक्षा विभिन्न प्रकार के सामाजिक,दार्शनिक औद्योगिक परिवर्तनों की जननी मानी जाती है | शिक्षा स्वयं भी परिवर्तनों से परिवर्तित होती रहती है क्योंकि बिना परिवर्तन के वह सामाजिक जीवनादर्शों से लोगों को परिचित कराने में अक्षम हो जाती है | परिवर्तन से शिक्षा समय – सापेक्ष बनती है और उस में नूतन प्रवृतियों का संचार होता रहता है | आधुनिक विज्ञान शिक्षण में प्रयोग करके सीखना और प्रत्यक्ष तथा व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना दोनों महत्वपूर्ण पक्ष स्थान बना रहें हैं | ऐसे अनुभव नवाचारों से ही संभव है | व्यावहारिक अनुभव अधिक उपयोगी और स्थाई होतें हैं | इन अनुभवों का विविध परिस्थियों में स्थानांतरण भी किया जा सकता है | आज ज्ञान –विज्ञान के युग में हर क्षेत्र में परिवर्तन युक्त नित नये – नये आविष्कार हो रहे हैं ,जिसकी अपनी गरिमा एवं महत्व है | समाज, शिक्षा , सभी क्षेत्रों में परिवर्तन युक्त नवीन विचारों ,अविष्कारों को आत्मसात करने से इन सब को नयी स्फूर्ति ,नया स्वरुप एवं विकास के नये रास्तें मिलते हैं | यदि शिक्षा का अर्थ बालक का सर्वांगीन विकास है, तो शिक्षक के प्रत्येक नवाचार में बच्चों की सहभागिता आवश्यक है| तथा यह भी जरुरी है की शिक्षक अपने आचरण व चरित्र में ऐसा परिवर्तन लाये जिससे यह लगे की शिक्षक,वेतन भोगी पद नहीं बल्कि साधना और सृजना से जुड़ा एक समग्र व्यक्तित्व है |

1.**विकास:**

कार्यबल को कुशल बनाना: विकसित भारत का उद्देश्य औद्योगिक माँगों और नई तकनीकी प्रगति को व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ जोड़ना है। हमें उद्यमिता, हरित ऊर्जा, आईटी, स्वास्थ्य सेवा और कृषि जैसे क्षेत्रों में विविध पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने चाहिए। विकसित भारत को प्रशिक्षुता और इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रदान करने चाहिए ताकि लोग वास्तविक दुनिया का अनुभव प्राप्त कर सकें।

मान्यता और प्रमाणन: व्यावसायिक योग्यताओं की मान्यता और रोजगारपरकता सुनिश्चित करने के लिए, विकसित भारत मज़बूत प्रमाणन तंत्र स्थापित करेगा। व्यावसायिक शिक्षा एक वांछनीय और विश्वसनीय पेशेवर मार्ग बनेगी। इसके परिणामस्वरूप, लोगों को कौशल हासिल करने और औपचारिक क्षेत्र में रोजगार योग्य या स्व-रोजगार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

आजीवन शिक्षा: ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, सूक्ष्म-प्रमाणपत्रों और व्यावसायिक कौशल उन्नयन कार्यक्रमों के माध्यम से, हमें निरंतर कौशल विकास को बढ़ावा देना चाहिए। संस्थानों को उन लोगों की सहायता करनी चाहिए जो वैकल्पिक करियर की तलाश में हैं या बदलते रोज़गार बाज़ारों के साथ तालमेल बिठाना चाहते हैं।

कौशल की कमी को दूर करना : विकसित भारत के आर्थिक विस्तार के लिए प्रशिक्षित कार्यबल की आवश्यकता होगी। इसके लिए व्यावसायिक माँगों के अनुरूप कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। ये पाठ्यक्रम आसानी से उपलब्ध होने चाहिए, उचित मूल्य पर उपलब्ध होने चाहिए और इनमें सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों तरह की शिक्षा शामिल होनी चाहिए।

उद्यमिता और नवाचार: सभी इस बात से सहमत होंगे कि एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था उद्यमशीलता की भावना को प्रोत्साहित करने पर निर्भर करती है। उच्च शिक्षा संस्थानों को उद्यमिता शिक्षण को शामिल करना चाहिए, छात्रों के लिए व्यवसाय इनक्यूबेशन केंद्र स्थापित करने चाहिए और रचनात्मकता एवं नवाचार को बढ़ावा देना चाहिए।

2. प्रौद्योगिकी का एकीकरण:

डिजिटल अवसंरचना: डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए, विकसित भारत को सभी को सस्ता इंटरनेट, गैजेट और डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण उपलब्ध कराना होगा। विश्वसनीय इंटरनेट पहुँच में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, महत्वपूर्ण निवेश करना होगा।

तकनीक-सक्षम शिक्षा: तकनीक में शिक्षा को पूरी तरह से बदलने की क्षमता है। विकसित भारत में तकनीक का उपयोग सुगमता में सुधार, शिक्षण को अनुकूलित करने और आकर्षक शैक्षिक सामग्री तैयार करने के लिए किया जाएगा। इसमें गेमीफाइड लर्निंग मॉड्यूल, वर्चुअल रियलिटी सिमुलेशन और एआई-संचालित प्रशिक्षक शामिल हो सकते हैं। विकसित भारत में तकनीक का उपयोग जुड़ाव को बेहतर बनाने, शिक्षण को अनुकूलित करने और पारंपरिक कक्षा-कक्षों से बाहर शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए किया जाएगा। बेहतर समझ के लिए, विकसित भारत इंटरैक्टिव टूल, सिमुलेशन और वर्चुअल रियलिटी अनुभवों का उपयोग करेगा।

डिजिटल साक्षरता और समावेशन: सभी छात्रों को प्रौद्योगिकी-संवर्धित शिक्षा तक समान पहुँच प्रदान करने के लिए, डिजिटल विभाजन को समाप्त करना होगा। डिजिटल साक्षरता पहलों को प्राथमिकता देना, उचित मूल्य पर इंटरनेट कनेक्शन उपलब्ध कराना और सर्वसुलभ शिक्षण वातावरण का निर्माण करना, ये सभी विकसित भारत का हिस्सा हैं।

प्रौद्योगिकी का ज़िम्मेदारी से उपयोग: प्रौद्योगिकी को अपनाने का अर्थ है यह सुनिश्चित करना कि इसका उपयोग ज़िम्मेदारी से किया जाए। विकसित भारत, प्रौद्योगिकी शिक्षा में नैतिक मुद्दों पर ज़ोर देगा और उचित इंटरनेट आचरण और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करेगा।

शिक्षक प्रशिक्षण और सहायता : एक विकसित भारत में शिक्षकों को कक्षा में प्रौद्योगिकी का सफल उपयोग करने के लिए शिक्षण दृष्टिकोण और डिजिटल साक्षरता क्षमताओं से लैस किया जाएगा। हमें शिक्षकों के बीच आजीवन विकास और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

औपचारिक या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के अलावा, विकासशील भारत के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए हमें अतिरिक्त योग्यताएं भी अर्जित करने की आवश्यकता है।

छात्रों में भविष्य की कौशल आवश्यकताएं हैं :

1.संचार

वर्तमान व्यवसाय में, प्रभावी संचार भविष्य के लिए एक आवश्यक कौशल है। इसमें अवधारणाओं और सूचनाओं के सहज आदान-प्रदान की क्षमता, विचारों को संक्षिप्त और सफलतापूर्वक संप्रेषित करने की क्षमता शामिल है। आज की तेज़, वैश्विक दुनिया में सशक्त संचार आवश्यक है।

2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता

आधुनिक व्यवसाय में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता भविष्य का एक महत्वपूर्ण कौशल बनती जा रही है। पारस्परिक संबंधों और नौकरी में सफलता का श्रेय भावनात्मक बुद्धिमत्ता को दिया जाने लगा है। कई सर्वेक्षणों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का ज़िक्र प्रमुखता से आता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) स्वयं के प्रति जागरूकता, नियंत्रण और अभिव्यक्ति है।

3. समस्या समाधान

समस्या-समाधान के मज़बूत कौशल छात्रों को अस्पष्ट परिस्थितियों और शैक्षणिक कठिनाइयों से निपटने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, भविष्य में, जटिल समस्याओं का समाधान केवल तकनीक और एल्गोरिदम के कारण आसानी से नहीं हो पाएगा। कार्यस्थल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में, प्रबंधकों और कर्मचारियों को पहले से कहीं ज़्यादा नई चुनौतियों का सामना करने और नए समाधान खोजने की आवश्यकता होगी।

4. रचनात्मकता

हर छात्र को रचनात्मक होना ज़रूरी है क्योंकि इससे उन्हें अलग तरह से सोचने और कार्य करने की क्षमता विकसित करने में मदद मिलती है। कल्पनाशील छात्र बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। खासकर प्रौद्योगिकी, विपणन और डिज़ाइन जैसे उद्योगों में, रचनात्मकता को बहुत महत्व दिया जाता है। रचनात्मकता विकसित करने के लिए विचार-मंथन एक आवश्यक अभ्यास है। भविष्य की प्रक्रियाओं, समाधानों और उत्पादों के निर्माण के लिए नवाचार, विचार-मंथन और रचनात्मकता महत्वपूर्ण क्षमताएँ हैं।

5. सहयोग

एक साझा उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक टीम के रूप में काम करना। इसमें संगठनात्मक कौशल, संचार कौशल, अनुकूलनशीलता और खुलापन शामिल है। सहयोग और टीमवर्क की प्रकृति बदल रही है क्योंकि टीमों में हाइब्रिड कर्मचारी, पूरी तरह से दूरस्थ कर्मचारी, ठेकेदार और अन्य शामिल हो रहे हैं।

6. सक्रिय शिक्षण और सीखने का दृष्टिकोण

जो लोग आजीवन सीखने की कोशिश करते हैं, वे पाएंगे कि शिक्षा पूंजीगत लाभ का एक निरंतर स्रोत है। तेज़ी से बदलते सामाजिक और व्यावसायिक परिवेश में, खुद को लगातार बेहतर बनाते रहना बेहद ज़रूरी है।

7. निर्णय लेना

निर्णय लेने और निर्णय लेने की योग्यता। जटिल परिस्थितियों में, निष्पक्ष निर्णय और त्वरित, व्यापक निर्णय लेने की क्षमता अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। निर्णय लेने और निर्णय लेने की योग्यता प्रत्येक शिक्षण प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा होनी चाहिए।

8. पारस्परिक कौशल

ये कौशल जीवन के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण हैं, जिनमें व्यक्तिगत संबंध, कार्य वातावरण और सामाजिक परिवेश शामिल हैं। यहाँ कुछ पारस्परिक कौशल दिए गए हैं: संचार, सहानुभूति, संघर्ष समाधान, बातचीत, सक्रिय सूचीकरण, दृढ़ता, टीम वर्क, अनुकूलनशीलता, सम्मान और नेतृत्व।

9. समय प्रबंधन

समय प्रबंधन, उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गतिविधियों पर खर्च किए जाने वाले समय की योजना बनाने और उसे नियंत्रित करने की प्रक्रिया है। प्रभावी समय प्रबंधन व्यक्तियों को कार्यों को प्राथमिकता देने, संसाधनों का उचित आवंटन करने और अपने उपलब्ध समय का अधिकतम उपयोग करने में सक्षम बनाता है। समय प्रबंधन के कुछ प्रमुख पहलू हैं: लक्ष्य निर्धारण, प्राथमिकता निर्धारण, योजना बनाना, समय पर नज़र रखना, सीमाएँ निर्धारित करना, कार्य सौंपना और व्यवधानों का प्रबंधन।

10. तार्किक तर्क

सुविचारित निर्णय लेने, समस्याओं का कुशलतापूर्वक समाधान करने और विभिन्न परिस्थितियों में सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए—शैक्षणिक, व्यावसायिक और दैनिक जीवन में—अच्छी तार्किक क्षमताएँ विकसित करना अनिवार्य है। तार्किक तर्क को विभिन्न प्रकार के तार्किक तर्कों, अभ्यास और आलोचनात्मक चिंतन कार्यों के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है।

11. नेतृत्व

नेतृत्व के गुण करियर की सफलता के लिए बेहद ज़रूरी हैं क्योंकि ये गुण व्यक्तियों को समान लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए दूसरों को प्रेरित, प्रोत्साहित और मार्गदर्शन करने में सक्षम बनाते हैं। नेतृत्व के गुणों को अपनाकर, व्यक्ति नेता के रूप में अपनी प्रभावशीलता बढ़ा सकते हैं और उच्च प्रदर्शन करने वाली टीमों को बढ़ावा देकर, संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करके, और अपने कार्यस्थलों और समुदायों पर सकारात्मक प्रभाव डालकर करियर की सफलता को गति दे सकते हैं।

12. एनालिटिक्स

विश्लेषणात्मक क्षमताएँ विभिन्न प्रकार के करियर में सफलता के लिए आधारभूत हैं, जो व्यक्तियों को समस्याओं का समाधान करने, सोच-समझकर निर्णय लेने, नवाचार को बढ़ावा देने और अपने पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं। अपने विश्लेषणात्मक कौशल को विकसित और निखारकर, व्यक्ति अपनी प्रभावशीलता बढ़ा सकते हैं, अपने करियर को आगे बढ़ा सकते हैं और अपने संगठनों और उद्योगों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

13. प्रभाव से नेतृत्व करना

प्रभाव द्वारा नेतृत्व, करियर विकास की एक सक्रिय और सुविचारित रणनीति है जो लोगों को अपने चुने हुए उद्योगों में सफल होने, स्थायी संबंध बनाने और सार्थक प्रभाव डालने में सक्षम बनाती है। लोग अपनी नेतृत्व क्षमताओं को निखारकर और अपने प्रभाव का उपयोग करके खुद को प्रभावी नेता, परिवर्तन के वाहक और सकारात्मक बदलाव के उत्प्रेरक के रूप में स्थापित कर सकते हैं। इससे उनके करियर में उन्नति होगी और उनके समुदायों और संगठनों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ेगा।

14. संज्ञान

संज्ञान, सूचना प्राप्त करने, उसे संसाधित करने, समझने, याद रखने और उसका उपयोग करने में शामिल मानसिक प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। इसमें धारणा, ध्यान, स्मृति, भाषा, तर्क, समस्या-समाधान और निर्णय लेने सहित मानसिक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

19वीं सदी के भारतीय दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता,शिक्षाविद,महान विचारक, वक्ता, कवि और युवाओं के महान संरक्षक स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को भारत और दुनिया के उत्थान के पीछे प्रेरक शक्ति के रूप में जाना है। उनका मानना था कि युवाओं के भीतर छिपी शक्ति का यदि उपयोग किया जाए और उसे महान आदर्शों की ओर निर्देशित किया जाए, तो समाज में गहरा परिवर्तन आ सकता है। स्वामी जी ने युवाओं में चरित्र निर्माण, नैतिक अखंडता और आत्मविश्वास की मजबूत भावना के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उन्हें आधुनिक शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया, एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की, जो न केवल ज्ञान प्रदान करे बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के साथ कर्तव्य और आत्मनिर्भरता की भावना को भी बढ़ावा दे।

स्वामी विवेकानन्द जी एक महान हिंदू संत थे जिनकी जयंती हम हर साल 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाते हैं उन्होंने युवाओं की एक ऐसी पीढ़ी की कल्पना की थी जो निडर, निस्वार्थ और मानवता की सेवा के लिए प्रतिबद्ध होगी। उनके लिए बेसहारा लोगों की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा थी। वह चाहते थे कि देश के युवाओं में मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। उन्होंने देश की सेवा करने के उद्देश्य से उस समय युवाओं से एक बार कहा था कि तुम सब जाओ, जहां कहीं भी प्लेग या अकाल का प्रकोप हो या जहां भी लोग संकट में हों उनके कष्टों को कम करने में मदद करो।

स्वामी जी विवेकानन्द के ओजस्वी भाषण ने 11 सितंबर, 1893 को विश्व धर्म संसद, शिकागो में दुनिया भर से विभिन्न धर्मों के धार्मिक और आध्यात्मिक बुधीजीवियों की सभा पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत पूरे दिल से सभा को अमेरिका की बहनों और भाइयों कहकर संबोधित करते हुए की, जिससे वे लोग बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने जोरदार तालियां बजाकर उनका अभिनंदन किया।

उन्होंने कहा कि आपने हमारा जो गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण स्वागत किया है, उससे मेरा दिल अवर्णनीय बेहद खुशी से भर गया है और मैं खड़े होकर आप सबका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। मैं दुनिया में भिक्षुओं के सबसे प्राचीन संप्रदाय की ओर से आपको धन्यवाद देता हूं। मैं सभी वर्गों और संप्रदायों के लाखों-करोड़ों हिंदू लोगों और धर्मों की जननी की ओर से आपको धन्यवाद देता हूं। उन्होंने श्रोतागण को आगे बताया कि मुझे ऐसे धर्म से होने पर गर्व है जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति दोनों सिखाई है। हम न केवल सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास करते हैं बल्कि हम सभी धर्मों को सच्चा मानते हैं। मैं एक ऐसे राष्ट्र से संबंध रखता हूं जिसने पृथ्वी पर सभी धर्मों और सभी राष्ट्रों के सताए हुए और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे अपने राष्ट्र पर गर्व है।

उनका युवाओं के लिए सुप्रसिद्ध आह्वान था कि उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए और तुम्हें अंदर से बाहर तक आगे बढ़ना है। कोई तुम्हें सिखा नहीं सकता, कोई तुम्हें आध्यात्मिक नहीं बना सकता। आपकी अपनी आत्मा के अलावा कोई अन्य शिक्षक नहीं है। साथ ही इस तथ्य पर जोर दिया गया कि किसी राष्ट्र की ताकत और जीवन शक्ति उसके युवाओं के हाथों में होती है। उनके लिए, युवा सकारात्मक परिवर्तन के अग्रदूत हैं, उनमें बेहतर भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक ऊर्जा, उत्साह और रचनात्मकता होती है और उन्हें अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने और उसका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, उनमें आत्मविश्वास और निडरता विकसित करने का आग्रह किया जाता है। उन्होंने कहा कि ‘‘सबसे बड़ा पाप यह सोचना है कि आप कमज़ोर हैं। ब्रह्मांड की सभी शक्तियाँ पहले से ही हमारी हैं। ये हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हाथ रखकर रोते हैं कि अंधेरा है। अपनी जिंदगी में जोखिम उठाओ। यदि आप जीतते हैं, तो आप नेतृत्व कर सकते हैं, यदि आप हारते हैं, तो आप मार्गदर्शन कर सकते हैं।स्वामी जी ने युवाओं को खेल के मैदान में रहने की सलाह दी

आजभारत का अवसर - इसका निर्णायक मोड़ परहै।

ये भारत का अमृत काल है. भारत कई मोर्चों पर बदल चुका है और आगे बढ़ने के लिए तैयार है। आज सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे में व्यापक विस्तार हुआ है|पिछले वर्षों में नीतियों और योजनाओं के माध्यम से जैसे समग्र शिक्षा और विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल और नर्सिंग कॉलेजों का विस्तार, स्किलिंग (प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना), और कई अन्य। पिछले दशक में, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है, और भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली आज लगभग 1,15 विश्वविद्यालयों/विश्वविद्यालय-स्तरीय संस्थानों, लगभग 43,800 कॉलेजों और लगभग 11,300 स्टैंड-अलोन संस्थानों का दावा करती है, जिनमें लगभग 4.35 करोड़ छात्र हैं। उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) लगातार बढ़कर 28.5 हो गया है।

इसी तरह, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का सभी मोर्चों पर व्यापक विस्तार हुआ है। 2025 में,1,57,000 आयुष्मान भारत केंद्र थे, जो समुदायों को उनके घरों के करीब प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करते थे। लगभग 13.96 लाख आंगनवाड़ी केंद्रों का विशाल नेटवर्क लगभग 10 करोड़ बच्चों को प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा प्रदान करता है। शिशु मृत्यु दर (आईएमआर), मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) और कम वजन वाले बच्चों के प्रतिशत जैसे विभिन्न स्वास्थ्य संकेतकों में नाटकीय रूप से गिरावट आई है। 2018 में शुरू किए गए पोषण मिशन के तहत 10 करोड़ से अधिक महिलाओं और बच्चों को कवर किया गया है। मिशन इंद्रधनुष के तहत मजबूत टीकाकरण कार्यक्रमों के कारण पूर्ण टीकाकरण कवरेज 62% से बढ़कर 81% हो गया है। आगे बढ़ते हुए, हमें स्वास्थ्य सेवा को वैश्विक स्तर तक बढ़ाने की जरूरत है।

ग्रामीण भारत भी बदल रहा है। हम बिजली, पेयजल, बैंक खाते, सड़कें, मोबाइल कनेक्टिविटी और कई अन्य क्षेत्रों में सार्वभौमिक कवरेज हासिल करने के करीब हैं या पहले ही हासिल कर चुके हैं। ग्रामीण भारत को अब शहरी भारत के समान लाभ मिलने लगा है। हमने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना और मनरेगा के माध्यम से भी गरीबों को मजबूत किया है और उन्हें संकट से बचाया है। प्रधानमंत्री आवास योजना सभी को आवास उपलब्ध करा रही है।

डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी सहायक सरकारी नीतियों के साथ मिलकर युवा भारत की रचनात्मकता और नवाचार की क्षमता युवाओं को नौकरी निर्माता बनने में सक्षम बना रही है। भारत 100 से अधिक यूनिकॉर्न का घर है, जिसका कुल मूल्यांकन 340 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बनकर उभरा है|

हालाँकि ये सभी उस टेकऑफ़ क्षण की ओर इशारा करते हैं जिसमें हम अभी हैं, सबसे महत्वपूर्ण हमारा जनसांख्यिकीय लाभांश है। 144 करोड़ की आबादी के साथ, भारत 29 वर्ष की औसत आयु के साथ सबसे युवा देशों में से एक है। यह दुनिया की कुल युवा आबादी का लगभग 20% है। यह एक बहुत बड़ा अवसर है, जिसके 2047 तक चलने की संभावना है। इस लाभांश का अच्छी तरह से उपयोग करके, हम भारत को एक विकसित भारत के रूप में आगे बढ़ा सकते हैं।

भारत ने क्वांटम छलांग क्षमताओं का प्रदर्शन किया है

पिछले दशक में भारत को बदलने की हमारी क्षमताओं का अभूतपूर्व प्रदर्शन देखा गया है। लक्षित योजनाओं के साथ किसी को भी पीछे न छोड़ने पर केंद्रित एक व्यापक शासन मॉडल ने 13.5 करोड़ लोगों को बहुआयामी गरीबी से बाहर निकाला है, जो 2030 के सतत विकास लक्ष्यों से काफी आगे है। कुछ परिवर्तनकारी प्रभावशाली पहलें जो इस बात का प्रमाण हैं कि 'हम कर सकते हैं' ये हैं:

खेलो इंडिया के ठोस प्रयासों के माध्यम से, हम पिछले रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं और हाल के एशियाई खेलों में पदकों में 100 का आंकड़ा पार कर लिया है।

जन धन खाते छोटी अवधि में, हमने वित्तीय समावेशन सुनिश्चित करते हुए 40 करोड़ बैंक खाते जोड़े, लोगों को उम्मीद थी कि इसमें कई साल लगेंगे।

सी. कोविड टीके स्वदेशी कोविड-19 टीकों के साथ COWIN प्लेटफॉर्म के माध्यम से चलाया गया कोविड टीकाकरण कार्यक्रम, 200 करोड़ प्राप्तकर्ताओं तक बिना किसी त्रुटि के पहुंचाया गया दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम था। यह एक सार्वजनिक स्वास्थ्य उपलब्धि है जिसका मानव इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है। हमने वैक्सीन मैत्री पहल के माध्यम से दुनिया भर में लाखों लोगों की जान बचाने में भी मदद की, 98 देशों को 23.5 करोड़ कोविड टीके मुफ्त उपलब्ध कराए। यह वैश्विक स्वास्थ्य और कल्याण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

चंद्रमा पर भारत के चंद्रयान मिशन और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बनना, आर्थिक तरीके से सीमाओं को तोड़ते हुए, विज्ञान में हमारी उत्कृष्टता का प्रदर्शन करता है। इसने दुनिया के अग्रणी देशों को आश्चर्यचकित कर दिया है और यह एक प्रेरणा है कि सीमित बजट में क्या हासिल किया जा सकता है और यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे आने वाले महान कार्यों के लिए एक प्रोत्साहन है। भारत के मितव्ययी नवाचार के अनूठे मॉडल को 'किफायती उत्कृष्टता' के रूप में जाना जा सकता है और यह अन्य देशों के लिए एक मार्गदर्शक है।

जलवायु लक्ष्य भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने गैर-जीवाश्म ईंधन से अपनी ऊर्जा क्षमता का 40% पूरा करके अपनी पेरिस 2015 जलवायु प्रतिबद्धताओं को समय से 9 साल पहले पूरा कर लिया है। इससे हमारी वैश्विक साख बढ़ी है।'

डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर हमारे द्वारा स्थापित डीपीआई का तीव्र गति से विस्तार किया गया है, जिससे भारत डिजिटलीकरण में विश्व में अग्रणी बन गया है|

एक विश्व नेता के रूप में भारत की वैश्विक स्थिति, G20 की हमारी अध्यक्षता ने देखी

दुनिया भारत की कूटनीतिक और संगठनात्मक क्षमताओं का सम्मान कर रही है। हम G20 सत्रों को भारत के हर कोने में ले गए और नई दिल्ली नेताओं की घोषणा भारत के इतिहास में एक मील का पत्थर है। भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थान अब भारत में स्थापित किए जा रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय निवेशक बड़ी संख्या में भारत आ रहे हैं। कई मायनों में भारत दुनिया का नेतृत्व कर रहा है.

ये नाटकीय सुधार एक व्यापक शासन मॉडल के कारण हुए हैं जो सेवा वितरण की गति, संचालन की पारदर्शिता और जमीनी स्तर पर प्रभाव और परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने पर केंद्रित है। यह भारत के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण के प्रति एक विलक्षण प्रतिबद्धता के कारण भी है।

आगे की यात्रा – भारतीय ज्ञानप्रणाली मेंशैक्षिक नवाचार एवं विकसित भारत2047चूँकि भारत इस महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है, अपने विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि दृढ़ नेतृत्व के साथ भारत की नियति में जबरदस्त समर्पण और विश्वास, इस क्षमता को साकार करने के लिए आवश्यक है। 2047 तक भारत को एक विकसित भारत बनाने के लिए मिशन मोड में बहुत बड़ा काम करने की जरूरत है। ऐसा करने के लिए, एक साहसिक, महत्वाकांक्षी और परिवर्तनकारी एजेंडा तैयार करने की आवश्यकता है।

हमेशा की तरह कारोबार नहीं चलेगा. हमें भविष्य का निर्माण करना होगा। युवाओं को 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण पर विचार करने और उसमें योगदान देने के लिए आमंत्रित करके उनके नवीन विचारों को राष्ट्र-निर्माण में शामिल करना महत्वपूर्ण है। यह आउटरीच पहल पूरे भारत में लाखों युवाओं को वह अवसर प्रदान करती

विजन इंडिया 2047 (Vision India2047) अगले 25 वर्षों में भारत के विकास का खाका तैयार करने के लिये भारत के शीर्ष नीति थिंक टैंक नीति आयोग (NITI Aayog) द्वारा शुरू की गई एक परियोजना है।

परियोजना का लक्ष्य भारत को नवाचार एवं प्रौद्योगिकी में वैश्विक अग्रणी देश, मानव विकास एवं सामाजिक कल्याण का मॉडल और पर्यावरणीय संवहनीयता का चैंपियन या उत्साही पक्ष-समर्थक बनाना है।

संरचनात्मक रूपांतरण: यह निम्न उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे कृषि) से उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे विनिर्माण एवं सेवाएँ) की ओर संसाधनों के संक्रमण को संदर्भित करता है। इससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है, रोज़गार सृजित हो सकते हैं और गरीबी कम हो सकती है।

श्रम बाज़ारों का निर्माण: इसमें श्रम आपूर्ति की गुणवत्ता एवं मात्रा में सुधार लाना, श्रमिकों के कौशल एवं रोज़गार योग्यता को बढ़ाना और निष्पक्ष एवं कुशल श्रम नियमों को सुनिश्चित करना शामिल है। इससे श्रम उत्पादकता बढ़ सकती है, अनौपचारिकता कम हो सकती है और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।

प्रतिस्पर्द्धात्मकता बढ़ाना: इसमें कंपनियों की दक्षता एवं नवाचार को बढ़ाना, उत्पादों एवं सेवाओं की गुणवत्ता एवं विविधता में सुधार करना और घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों का विस्तार करना शामिल है। इससे आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा मिल सकता है, निर्यात बढ़ सकता है और निवेश आकर्षित हो सकता है।

वित्तीय और सामाजिक समावेशन में सुधार: इसमें गरीबों और हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिये वित्तीय सेवाओं और सामाजिक कल्याण योजनाओं की पहुँच एवं सामर्थ्य का विस्तार करना शामिल है। इससे उनकी आय, बचत और उपभोग के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्तीकरण में सुधार हो सकता है।

शासन सुधार: इसमें शासन की संस्थाओं और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना शामिल है, जैसे विधि का शासन, जवाबदेही, पारदर्शिता और भागीदारी। इससे सार्वजनिक वस्तुओं एवं सेवाओं के वितरण में सुधार हो सकता है, भ्रष्टाचार कम हो सकता है और विश्वास एवं की वृद्धि हो सकती है।

हरित क्रांति के अंतर्गत अवसरों का लाभ उठाना: इसमें नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और जलवायु प्रत्यास्थता जैसी हरित प्रौद्योगिकियों और अभ्यासों को अपनाना और उन्हें बढ़ावा देना शामिल है। इससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम किया जा सकता है, पर्यावरणीय क्षति का शमन हो सकता है और वृद्धि एवं विकास के नए अवसर पैदा हो सकते हैं।

निष्कर्ष:-

अमृत काल के दौरान आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं और सिद्धांतों का अधिकतम लाभ उठाएँ। हम सब 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में इसलिए मनाते हैं कि ताकि हम स्वामी जी के आदर्शों और उनके दर्शन के लिए, जिनके लिए वे जिए और काम किए, वे भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत बन सकें। स्वामी जी के बताये रास्ते पर चलकर एक भारत, सर्वश्रेष्ठ भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सके। उनका दृढ़ विश्वास था कि सभी रास्ते एक ही सच्चे ईश्वर तक जाते हैं, जैसा कि ऋग्वेद में भी उल्लेख किया गया है कि एकम् सत विप्रा बहुदा वदन्ति (सत्य एक है, बुद्धिमान इसे विभिन्न नामों से बुलाते हैं।) आइए, आज हम सब संकल्प लें कि स्वामी जी की शिक्षाओं और सिद्धांतों के सार को राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, विविधता में एकता, समावेशिता और पवित्रता को आत्मसात करें। यही स्वामी विवेकानन्द जी को हम सबकी तरफ से सच्ची श्रद्धांजलि होगी और 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

ग्रंथ सूची (Bibliography.):-

[1]. कॉल एलO (1997) शैक्षिक शोध की प्राविधियाँ,नई दिल्ली, विकास पब्लिकेशन हाउस |

[2]. एन.सी.ई.टी. पटना (2008) बिहार पाठ्यचर्या की रुपरेखा |

[3]. एन.सी.ई.टी. नई दिल्ली (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा |

[4]. शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) भारत का राजपत्र, भारत सरकार,नई दिल्ली |

[5]. बि.शि.प.परी.(2010) शैक्षिक नवाचार पर आधारित शिक्षकों हेतु हस्तपुस्तिका |

[6]. शारदा पुस्तक भवन द्वार प्रकाशित डॉ.राजीव मालवीय की पुस्तक "शिक्षा की नूतन आयाम |"

[7]. डॉक्टर राजीव मालवीय की पुस्तक "शैक्षिक तकनीकि एवं नवाचार" प्रकाशित – शारदा पुस्तक भवन |

[8]. शैक्षिक तकनीकी: डॉ.एस.पी कुलश्रेष्ठ

[9]. शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार: डॉ. एस.पीकुलश्रेष्ठ

[10]. शैक्षिक तकनीकी के आयाम: रमेश प्रसाद पाठक शिक्षण तकनीकी की रूपरेखा: मोहम्मद जाहिद हुसैन
[11]. Centre For Education Innovations/ Literature Review Retrieved From Htt://WWW.Educationaninnovations.Org
[12]. Kelly Reberts And Dr.Susane Owen-Innovative Education: A Review Of The Literature Government Of South Australia.